ओम शांति

# सर्व धर्म सम्मेलन – सेवा समाचार

## डोंबिवली सेंटर (घाटकोपर सबझोन) मुंबई

त्रिमुर्ती शिवजयंती (महाशिवरात्री) के उपलक्ष्स में शनिवार, दि. 23 फरवरी 2019 इस तिथी पर डोंबिवली (मुंबई) सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित **'सर्व धर्म सम्मेलन'** का भव्य कार्यक्रम ब्राह्मण सभा हॉल में निर्विघ्न संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में डोंबिवली सेवाकेन्द्र की मुख्य प्रशासिका आदरणीय शकु दीदीजी तथा अन्य मान्यवर आ. भागवताचार्य ह.भ.प.श्री. बालकृष्ण महाराज पाटील जी (किर्तनकार), आदरणीय अब्बास वालीकरीमवाला (मौलवी – प्राध्यापक, मुबारका इंग्लीश हायस्कूल), आदरणीय सौ. माधुरी घाटे जी (अध्यक्षा, गोविंदानंद श्रीराम मंदिर), आ. विद्वान रामचंद्र बायर जी (अध्यक्ष, अयप्पा मंदिर), आ.सुरेश सींघवी जी (अध्यक्ष, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी) और एस.एन. जाधव जी, वरीष्ठ पोलिस निरिक्षक, वाहतुक शाखा, आदि महोदय उपस्थित रहे। बैज, शॉल और तुलसी का पौधा देकर मान्यवरों को सन्मानित किया गया तथा दीप प्रज्वलन से इस शुभ काय्रक्रम का प्रारंभ हुआ।

Figure 1 Candle Lighting : From Left B. K. Maisha, Bro. Abbas Valikarimwala, Bro. Suresh Singhvi, Sis. Madhuri Ghate, Rajyogini B. K. Shaku, Acharya Balkrushna Maharaj, Bro. B.K. Keshav Bhoir, B. K.Sangita

आ.अब्बास करीमवालाजी ने अपनी वाणी में कहा की, अगर आप अपने लिए जो चाहते हो वह सभी के लिए सोचो, तो कभी कोई गलत होगा ही नहीं क्योंकि कोई भी इन्सान खुद के लिए कभी गलत सोच नहीं सकता। फिर उन्होंने इस्लाम शब्द का सही मतलब बताया कि इस्लाम का अर्थ है पीस, शांति, अमन। परंतु आज इस शब्द को और उसके अर्थ को लोगों ने बहुत पीछे छोड़ दिया है और अगर कोई इस्लाम का नाम लेकर गलत कर्म करता है तो वह इस्लामी है ही नहीं। इस तरह उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये।

डोंबिवली सेवाकेन्द्र की संचालिका आ. शकु दीदीजी ने कहा कि हम सब एक परमपिता परमात्मा के बच्चे है और इस नाते से आत्मा–आत्मा भाई है। उनका और हमारा स्वरूप एक जैसा है, बिन्दु समान। उसके बाद शकु दीदीजी ने पांच संकल्पों की प्रतिज्ञा सभी पधारे हुए सदस्यों से करवाई।

आ. रामचंद्र ब्रायर जी ने कहा की हमें भारतीय संस्कृती का गर्व होना चाहिए। भारत का अर्थ है जिसे ज्ञान का रस हो, वह भारतीय है।

आ. रॉक पीटर लोबो जी ने कहा कि, बायबल में लिखा है, यह सम्पूर्ण सृष्टी भगवान ने बनाई और फिर उन्होंने मनुष्य को बनाया। मनुष्य को कहा कि इस सृष्टी की देखभाल करे। सब खुशी से रहे और एक–दुसरे के साथ प्रेम से व्यवहार करें।

आ. बालकृष्ण महाराज पाटील जी ने कहा कि, धर्म की राह पर चलना है, धर्म में ही सुख है। इस विश्व में कोई भी गलत नहीं कर रहे है, सभी अपने–अपने धर्म का पालन कर रहे है, जिनके वह दृष्टीकोन सही है। परन्तु सबसे बड़ा धर्म मानवता धर्म है, इसे जरूर निभाना आना चाहिए।

आ. सुरेश सींघवी जी ने कहा कि, जो भी धर्म है – हिंदू, मुस्लिम, सीख, इसाई सब बाद में है, पहले इंसानियत का धर्म सबसे बड़ा है। जब व्यक्ति सोचता है कि यह काम करने से मुझे अच्छा लगेगा, अभिमान होगा, तो वह कार्य समाज के लिए कभी भी बुरा नहीं हो सकता। छोटे–छोटे कर्म करके भी हम अपनी देश और समाज के प्रति भावना को व्यक्त कर सकते है।

ऐसे कार्यक्रम में आये हुए महानुभावों ने सर्व धर्म समभाव के विषय में अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। सभी के विचारों से यह एक बात सच हो रही थी कि परमपिता परमात्मा का स्वरूप ज्योर्तिबिंदू है, वह एक है और हम बच्चों से समान प्रेम करता है।

इस तरह 150 से 200 के करिब भाई बहनों की उपस्थिती में सर्वधर्म सम्मेलन का यह कार्यक्रम अच्छी रिती सम्पन्न हुआ।